International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 1 January. 2023 || PP. 105-107

भारत का सांस्कृतिक आर्थिक विमर्श : उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में

श्रीमती शिल्पी

असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, कु मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

डॉ. प्रियंका सिंह

एसोसिएट प्रो., अर्थशास्त्र विभाग, शम्भु दयाल पीजी कॉलेज गाजियाबाद

सार

भारत का इतिहास एवं संस्कृति गतिशील है. यह अपनी भाषाओं,भौगोलिक क्षेत्रों, धार्मिक परंपराओं और सामाजिक स्तरीकरण के बीच अविश्वसनीय सांस्कृतिक विविधता को समायोजित करता है. इसके मूल्य में दृष्टिकोण, विश्वासों और मानदंडों का सिद्धांत समाहित है. अपनी संस्कृति से समृद्ध भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है,इसी कारण प्रत्येक भारतीय को अपनी संस्कृति की विशिष्टता व विविधता पर गर्व है. चाहे व कृषि क्षेत्र के बुनियादी ढांचे के विस्तार के रूप में, विज्ञान और इंजीनियरिंग में तकनीकी प्रगति के रूप में हो या संगीत, ललित कला, साहित्य और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण समृद्ध कलात्मक सांस्कृतिक संपन्नता के संबंध में हो. संस्कृति ही एक ऐसा उपयुक्त वातावरण है जो मनुष्य और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करता है. संस्कृति एक मानव को दूसरे मानव से एक समूह को दूसरे समूह से और एक समाज को दूसरे समाज से पृथक करती है. सनातन धर्म एवं संस्कृति से परिपूर्ण उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक नगरी है. जहां अयोध्या,काशी,मथुरा, प्रयाग, कुशीनगर,नैमिषारण्य, सारनाथ, वृंदावन, देवगढ़ चित्रकूट तीर्थ स्थान है.

बीज शब्द -सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आर्थिक विमर्श

प्रस्तावना-

राष्ट्रवाद इतिहास परंपरा भाषा संस्कृत को समाहित करता हुआ वह विश्वास है जो भारत में एक सशक्त लोकतंत्र का निर्माण करता है | भारत बहुभाषी, बहु धर्मी, बहु जातीय राष्ट्र है और इसकी सुंदरता इसकी अखंडता में समाहित है जिस को समेटे हुए भारतीय सशस्त्र राष्ट्र के रूप में प्रगति कर रहा है एक राष्ट्र के रूप में एक निश्चित भूभाग के अंतर्गत राजनीतिक आदर्शों का निर्माण भी किया है | वर्तमान में लोकतंत्र का आदेश सर्वोपरि है और भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की झलक पूरे इतिहास में मिलती है जिसका अभिप्राय सभ्यतामूलक आस्था संस्कृति विश्वास और विकास से सम्बद्ध रखता है | संभवत कोई ऐसा ही राष्ट्र होगा जिसकी भौगोलिक सीमाएं हजारों वर्ष पहले के ग्रंथों में भी मिलती हैं | विष्णु पुराण में इसका संदर्भ मिलता है |उत्तर प्रदेश का इतिहास 4000 वर्ष पुराना इतिहास है यह भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है और इसके साथ ही यह विश्व के मात्र 7 ऐसे देशों में से है जिनकी जनसंख्या किस राज्य से अधिक है उत्तर प्रदेश राज्य की सांस्कृतिक विरासत अद्वितीय है अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ ही यह अपनी भौगोलिक दृष्टि में भी उन्नत है. इसी कारण प्राचीन में यह राज्य कई आक्रांताओं के आक्रमण का केंद्र बिंदु रहा. इन सभी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उत्तर प्रदेश ने देश की प्रगति व समृद्धि में अपना योगदान दिया है और आज भी देता आ रहा है. पिछले कुछ वर्षों में उत्तर प्रदेश धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में आशातीत उन्नति की है और स्वयं को देश की सांस्कृतिक नगरी के रूप में स्थापित किया.

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद-

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा बहुत समय से वैश्विक विमर्श में रही जिसमें यह अकादमिक चर्चा के केंद्र में रही है | किसी भी देश की संस्कृति मानव विकास के साथ-साथ उन सभी पहलुओं का द्योतक है जो मूल्यों, विश्वास, प्रार्थओ और प्रयासों में समाहित हैं | यह ज्ञान, विज्ञान,अध्यात्म, आचरण, नैतिकता, वैज्ञानिक और तकनीकी गतिविधियों जैसे विभिन्न आयामों को समाहित करते हुए संपूर्ण होती है | जिसमें एक व्यक्ति और संपूर्ण समाज की सहभागिता होती है | जिसे हम कह सकते हैं कि यह एक समाज द्वारा वहन की गई विरासत की समग्रता है | एक प्रकार से समाज द्वारा उत्पन्न और संरक्षित भौतिक मानसिक आध्यात्मिक व बौद्धिक संपदा का संवर्धन है | यह जीवन के अर्थ का बोध कराने के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता में अपना योगदान देता है| भारतीय संस्कृति का अतीत प्रेरणादायक विचारों और आदर्शों के साथ बहुत सुदृढ़ व संपन्न रहा है और इसका एक बहुत प्राचीन इतिहास हैं| सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शाब्दिक रूप से एक आधुनिक 'पद'है जिसकी अवधारणा फ्रांस की क्रांति 1789 के बाद विकसित हुई | जिसमें राष्ट्र को सांस्कृतिक परिपेक्ष में परिभाषित किया गया | किसी राष्ट्र की पहचान एक राष्ट्र के रूप में कैसे होती है यदि इस पर विचार करें तो राजनीतिक विचारक एंथोनी डी स्मिथ ने राष्ट्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, " मानव समुदाय जिनकी अपनी मातृभूमि हो जिनकी समान गाथाएं और इतिहास एक जैसा हो, समान संस्कृति हो, अर्थव्यवस्था एक हो और सभी सदस्यों के अधिकार व कर्तव्य एक समान हो |" रूपर्ट इमर्सन ने राष्ट्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, " 'एक संबध्द समुदाय जिसकी विरासत समान हों और जो एक जैसा भविष्य पसंद करते हैं।'

निश्चित रूप से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में भारत का मजबूत लोकतंत्र है |सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत की आत्मा में है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ही प्रभाव था कि भारत ने विश्व भर से सताए लोगों को शरण दी और वह मुख्यधारा में सम्मिलित हो गए |राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी ने राष्ट्रीय जन के विभिन्न घटकों का उल्लेख किया है जिसमें उन्होंने इतिहास समान परंपरा शत्रु- मित्रता का समान भाव,भविष्य की समान आकांक्षा रखने वाले ऐसी भूमि का पुत्र संबंध समाज को राष्ट्र कहा है "| वही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार भारतीय संस्कृति के बारे में स्पष्ट

रूप से कहते हैं," भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह संपूर्ण जीवन का संपूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है| टुकड़े टुकड़े में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है परंतु व्यवहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं| पश्चिम की समस्या का मुख्य कारण उनका जीवन के संबंध में टुकड़ों -टुकड़ों में विचार करना तथा फिर उन सबको जोड़ने का प्रयत्न करना है |"

हिंदुत्व की मुख्य समर्थकों में से एक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कहा है कि वह हिंदू शब्द के सांस्कृतिक अर्थ में विश्वास करता है |हिंदू शब्द एक सांस्कृतिक और सभ्यतागत अवधारणा है ना कि राजनीतिक या धार्मिक हठधर्मिता| एक सांस्कृतिक अवधारणा के रूप में शब्द की प्रमुखता है जिसमें सभी सम्मिलित होंगे चाहे वह सिख हो,बौद्ध या जैन हो, मुस्लिम हो या ईसाई व पारसी | भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार में हिंदू है और इसमें वे सभी सम्मिलित हैं जिन्होंने भारत में जन्म लिया है| संघ ने स्पष्ट किया है कि यह केवल आर एस एस के दृढ़ विश्वास की बात नहीं है बल्कि इतिहास का तथ्य है |

भारत का राष्ट्रवाद राजनीतिक व भौतिकतावादी ना होकर सांस्कृतिक है जिसकी घोषणा श्रीराम ने की थी| भगवान श्री राम द्वारा लंका पर विजय प्राप्त होने पर जब लक्ष्मण ने कहा कि भैया हमें सोने की लंका पर विजय प्राप्त की है तो क्यों ना हम यही पर रह जाएं इस पर भगवान राम ने कहा,'अति
स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

अर्थात जननी जन्मभूमि मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है और यही अवधारणा भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है।

आर्थिक विमर्श

भारतीय संस्कृति में सद्भाव व एकता का सम्मिश्रण है और यही एकीकृत प्रणाली परिवार व समाज के संबंध को मजबूती से बांध कर रखता है जिस पर एक व्यक्ति की भावनाएं उसकी शक्ति आश्रित होती है. अपने सामुदायिक समूहों में व्यवस्था एवं सद्भाव बनाए रखने के लिए अपनी स्वयं की विनिमय प्रणाली रही है. सिंधु नदी के किनारे सिंधु घाटी सभ्यता जो 2800 ईसा पूर्व और 1800 ईसा पूर्व के बीच फली फूली एक उन्नत और समृद्ध आर्थिक व्यवस्था रही.

लगभग साढ़े तीन सहस्राब्दी साल पहले प्रारंभिक भारतीय व्यापार के साक्ष्य मे यह पता चला कि भारतीय उपमहाद्वीप को प्राचीन काल में वाणिज्यिक क्षेत्र के रूप में मान्यता मिली. व्यापार और शिल्प अधिशेष कृषि उत्पादन का विकास है जो भारत में पहली बार सिंधु घाटी सभ्यता में शहरी केंद्रों के उदय के साथ देखा गया था. प्राचीन काल से ही भारतीय व्यापार सभी रूपों में फला फूला चाहे वह सीमित आंतरिक या लंबी दूरी का बाहरी व्यापार हो तथा वह चाहे भूमि के माध्यम से हो या पानी के माध्यम से. हड़प्पा वासियों को कुशल समुद्री यात्रियों के रूप में अच्छी तरह जाना जाता रहा क्योंकि यह मोहरों तथा ताबीज पर नावो के चित्रण से स्पष्ट होता है. हड़प्पा वासियों ने ओमान, बहरीन और पश्चिम एशिया के अन्य स्थानों के साथ संपर्क स्थापित किया. जातक कथाओं सहित बौद्ध साहित्य भी समुद्री यात्राओं,जल पोतों और मिशनरियों के विदेश जाने के बृत्तांतो से भरा पड़ा है.

भारत की अधिकांश जनसंख्या गांव में निवास करती थी और यह गांव शुरुआत से स्वावलंबी रहें. कृषि ही इनका प्रमुख व्यवसाय था जो गांव की खाद्य आवश्यकता को पूरा करता था. इनमें कपड़ा,खाद्य प्रसंस्करण और शिल्प जैसे उद्योग के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध कराना था. यदि हम वर्गीकरण देखें तो किसान के अतिरिक्त अन्य वर्ग नाई,बढ़ई, डॉक्टर, सुनार, बुनकर आदि थे. गांव व शहरी केंद्रों में व्यापार सिक्कों के माध्यम से होता था लेकिन गांव में वस्तु विनिमय आर्थिक गतिविधियों की प्रमुख प्रणाली थी. प्राचीन भारतीय संस्कृति अपने अंदर अनेक आर्थिक गतिविधियों को संजोए हुए हैं. ऐसी अनेकों गतिविधियां विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से उत्पन्न होती हैं. सांस्कृतिक एवं लोक उत्सव जैसे सामाजिक समारोह में छोटी-छोटी आर्थिक गतिविधियों को जन्म देते हैं निश्चित रूप से भारत के गांव में बसी संस्कृति व सभ्यता जहां एक ओर बड़ी ही खूबसूरती से आर्थिक गतिविधियों का संप्रेषण करती है वही आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत करती है. भारत में सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला में कई हस्तशिल्प परंपराओं को जन्म दिया है. एनसीएईआर के अनुसार अनुमानित 47.5 लाख कारीगर सैकड़ों हस्तशिल्प वस्तुएं बनाते हैं जैसे धार्मिक कलाकृतियां वस्त्र एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं. ऐसी कई हुनरमंद व कारीगर ने विश्व प्रसिद्ध हस्तशिल्प बनाने के लिए अपने कौशल का विकास किया. उदाहरण स्वरूप पुरी के भगवान जगन्नाथ मंदिर में विशेष रूप से धार्मिक कार्यों के लिए पट्टा चित्र और तालियां बनाने वाले कारीगरो ने इन दोनों कलाकृतियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध बनाने के लिए अपने कौशल का विकास किया. कुछ वर्षों से बिहार की मधुबनी पेंटिंग, पश्चिम बंगाल की कालीघाट पेंटिंग, और कर्नाटक तमिलनाडु राजस्थान और मध्य प्रदेश से विदेशी धातु शिल्प पत्थर एवम लकड़ी की नक्काशी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों शिल्प बाजारों में लोकप्रिय हैं.

प्राचीन भारत में भारतीय हस्तशिल्प मसाले एवं हथकरघा उत्पाद व्यापार के लिए वस्तुओं का निर्माण करते थे.1700 ई. में विश्व की आय में भारत 22.6 प्रतिशत अपनी भागीदारी रखता था जो यूरोप के हिस्से के बराबर था. लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह भागीदारी 1952 में मात्र 3.8% रह गयी. इन सब के पीछे का कारण ब्रिटिश हुकूमत रही जिसने आक्रामक रूप से भारत की शिल्प परंपराओं का नाश किया. भारतीय संस्कृति एवं जीवन शैली को खंडित करने का पूरा प्रयास किया गया और एक सुनियोजित प्रयासों के माध्यम से सबसे समृद्ध संस्कृति को खंडित किया गया. 3 जुलाई 1835 को लॉर्ड मैकाले ने सुझाव दिया कि समृद्ध भारत पर स्थाई साम्राज्यवादी संप्रभुता स्थापित करने के लिए अंग्रेजों की एकमात्र राजनीतिक सफलता तब होगी जब वह भारतीयों को "स्वाद से अंग्रेज" बना लेंगे.

उत्तर प्रदेश का सकल राज्य घरेलू उत्पाद जीएसडीपी 2015-16 और 2020-21 के बीच लगभग 8.43% के सीएजीआर से बढ़कर 17.06 ट्रिलियन रुपए(यू एस $ 234.96 बिलियन) तक पहुंचा| शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी) 2015-16 और 2020- 21 के बीच लगभग 8.42% के सीएजीआर से बढ़कर 15.12 ट्रिलियन रुपए (यूएस $208.38 बिलियन) तक पहुंच गया | उत्तर प्रदेश राज्य की जीएसडीपी (वर्तमान मूल्य) में भी 2017 से 2021 तक 7% से अधिक की वृद्धि हुई जबकि यह वृद्धि कोविड-19 के प्रभाव के बावजूद देखने को मिली | सभी संसाधनों से परिपूर्ण उत्तर प्रदेश परंपरागत रूप से एक पिछड़ा और आबादी वाला राज्य रहा | इसी कारण से राज्य के मूल्यांकन के लिए सामाजिक संकेतको कि भूमिका महत्वपूर्ण है | पिछले 4 सालों के भीतर वर्तमान राज्य सरकार द्वारा वार्षिक सामाजिक व्यय में डेढ़ गुना वृद्धि होने से नीति आयोग द्वारा प्रकाशित भारत सूचकांक में उत्तर प्रदेश ने कुल 66 के राष्ट्रीय औसत के मुकाबले 60 अंक हासिल किए | वहीं स्वास्थ्य सूचकांक में उत्तर प्रदेश ने क्रमागत प्रदर्शन किया (जो पहले के मुकाबले वर्तमान का मूल्यांकन)|

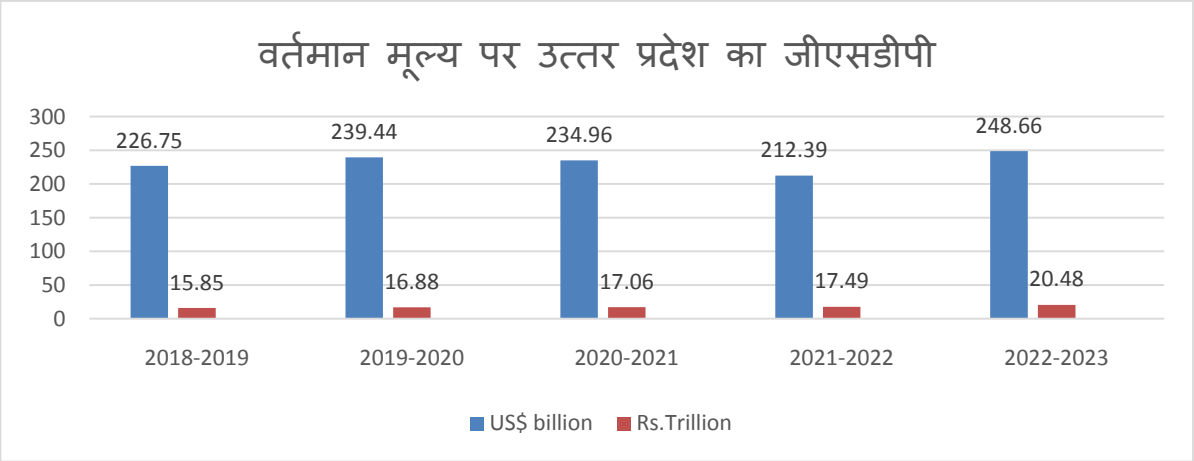

Source:MOSPI

उत्तर प्रदेश एक सांस्कृतिक नगरी है जिसकी प्रमुखता सामाजिक है न कि राजनैतिक ऐसी स्थिति में उत्तर प्रदेश में आर्थिक विमर्श कुछ समय से स्थापित हो रहा है जिसमें उसकी सांस्कृतिक महत्ता उदयीमान है | उत्तर प्रदेश में कैबिनेट द्वारा स्टार्टअप नीति 2020 और डाटा सेंटर नीति 2021 में संशोधन को मंजूरी दी गई | यह माइक्रोसॉफ्ट इंडिया(R&D) प्राइवेट लिमिटेड और नोएडा में स्थापित की जा रही है | जिसमें दो इकाइयों के 3240 करोड़ रुपए के कुल निवेश के साथ 20000 नौकरियों के सृजन में सहायक है | निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश की औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति 2022 पांच वर्षों के लिए प्रभावी होगा |

निष्कर्ष:

निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति अपने विविधताओं के साथ पूरे विश्व में आकर्षण व शोध का विषय रही. भारतीय व्यंजन लोकगीत संगीत कला हस्तशिल्प ग्रामीण जीवन और नृत्य मे आध्यात्मिकता का भाव निः सन्देह उसे लोकप्रिय बनाते हैं. उन्नत तकनीकी, प्रबंध कौशल एवं भारतीय व्यंजन को सम्मिलित कर योजना बद्ध तरीके से असंगठित क्षेत्र को और अधिक संगठित एवं लाभदायक बनाने की क्षमता रखते हैं. निश्चित रूप से वैश्वीकरण के इस दौर में इन उत्पादों का विपणन एक बड़ा अवसर प्रदान करता है और अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है. भारतीय जीवन मूल्यों की विविधता में एकता परिलक्षित होती है जो एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करती है | अतः हम कह सकते हैं कि भारत का राष्ट्रवाद सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित है जिसका महत्वपूर्ण उदाहरण अयोध्या में देखने को मिलता है | उत्तर प्रदेश प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के साथ-साथ हिंदू धर्म का उद्गम स्थल है | प्राचीन वैदिक साहित्य रामायण भगवत गीता आदि जैसे महान ग्रंथों में उत्तर प्रदेश का स्थान उल्लेखित है | इस प्रदेश ने भारतीय संस्कृतिक विरासत में भी मुख्य भूमिका निभाई है | रोजगार के अवसर को सृजित करने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार ने "एक जनपद एक उत्पाद "से एक महत्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की जिसका मुख्य उद्देश्य प्रदेश के प्रत्येक जनपद की विशिष्टता एवं कुशलता को ध्यान में रखकर उत्पादन एवं विपणन हेतु प्रोत्साहित किया जाना है | एक जनपद एक उत्पाद योजना की मुख्य विशेषता है इसमें कम पूंजी निवेश से बेहतर रोजगार की संभावनाएं उपलब्ध होती हैं | निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश भारत के सांस्कृतिक आर्थिक विमर्श का एक उदयीमान स्रोत है जो प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छटा बिखेर रहा है |

संदर्भ

कमल संदेश 17 जुलाई 2020
"सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संस्थापक थे श्रीराम" पंजाब केसरी 9 मई 2020
अरविंद सिसोदिया "भारतीय राष्ट्रवाद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" जनवरी 21, 2015 http:// arvindsisodiakota.blogspost.com
भगवती प्रकाश ,"सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं वैश्विक परिदृश्य" .pdf(researchgate.net)

नीलसन, काई. (1999)। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, न तो जातीय और न ही नागरिक। आर. बेइनर (सं.) में, राष्ट्रवाद का सिद्धांत (पीपी. 119-130)। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस.

डा. सतीश चन्द्र मित्तल, भारतीय राष्ट्रवाद का अतीत तथा वर्तमान राष्ट्रीयता की भारतीय अवधारणा तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" http://panchjanya.com/arch/2009/5/10/File20.htm